जुलाई २०२६

अक्रम एक्सप्रेस

मेरे मम्मी पापा

संपादकीय

बालमित्रों,

जब हम किसी सुंदर पेड़ को देखते हैं, तब हमें केवल तना, टहनियाँ और पत्ते ही दिखाई देते हैं। पेड़ की जड़, जो पेड़ को सहारा देकर उसकी रक्षा करती है, वह नहीं दिखाई देती। हमारे पेरेन्ट्स भी पेड़ की जड़ की तरह हमारा पालन-पोषण करते हैं और दिन-रात हमारी रक्षा करते हैं। हमें याद नहीं है कि बचपन से लेकर आज तक उन्होंने हमारे लिए क्या-क्या किया है, लेकिन उनकी देखभाल के कारण ही आज हम इतना सुखी जीवन जी रहे हैं। चलो, कहानियों और ज्ञानियों की समझ के माध्यम से पेरेन्ट्स के उपकार को समझें और उनके विनय में रहना सीखें।

- डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

July, 2026
Year 14, Issue : 04
Conti. Issue No.: 161
Published Monthly

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोनः ९३२८६६११६६/७७
Email: akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta
Published by Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist.- Gandhinagar.

© 2026, Mahavideh Foundation
All Rights Reserved

Price Per Copy: NIL

दादा और उनकी मदर

बचपन में एक बार दादा ने एक लड़के को छोटा सा पत्थर मारा। उस लड़के को खून निकल आया। दादा की मदर झवेर बा को इस बात का पता चला।

मार खाकर आना...

झवेर बा : यह क्या किया, भाई? उस लड़के को खून निकल आया।

दादा : लेकिन बा, मारूँ नहीं तो क्या करूँ? उसने किया ही ऐसा!

झवेर बा : उस लड़के की माँ नहीं है। वह तो अपनी चाची के घर रहता है। उसकी मरहम-पट्टी कौन करेगा? वह बेचारा कितना रो रहा होगा। उसे कितना दुःख हो रहा होगा। अब से तुम मार खाकर आना, लेकिन किसी को मारना मत। मैं तुम्हारी माँ हूँ, मैं तुम्हारा ध्यान रखूँगी।

अगर मम्मी मार खाकर आने की सीख दे, तो क्या कोई मम्मी की बात मानेगा? मम्मी की बात अच्छी लगेगी? लेकिन दादा को अपनी मदर की बात

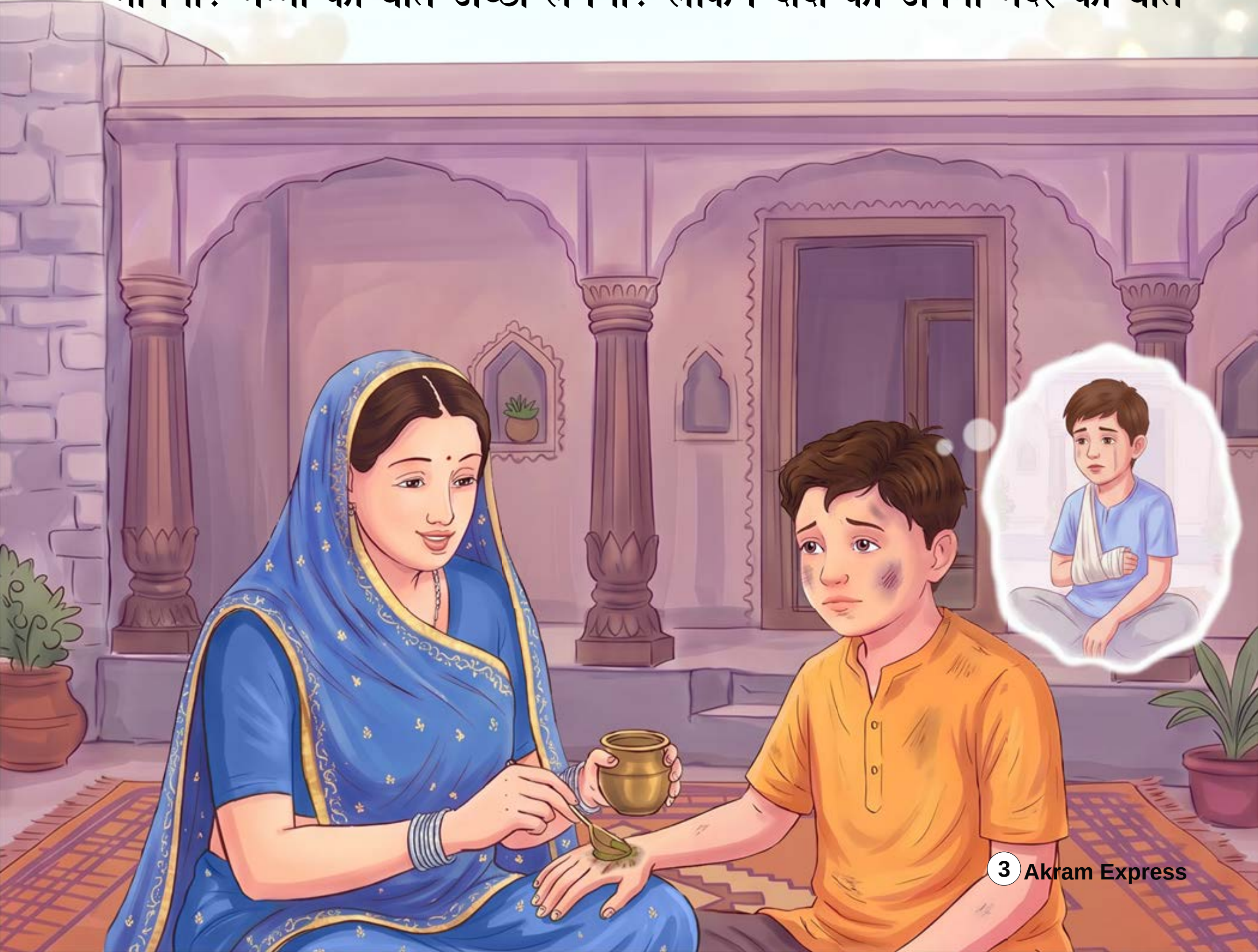

बहुत अच्छी लगी। उन्होंने अपनी मदर की बात तुरंत ही स्वीकार कर ली कि बा जो कह रही हैं, वह बात सही है और तब से उन्होंने कभी किसी को नहीं मारा।

तीन-तीन बार खाना खाते...

बड़ौदा में कभी-कभी दादा को अपने फ्रेन्ड सर्कल के साथ खाना खाने बैठना पड़ता था। कोई बहुत आग्रह करता तो 'ना' कहना मुश्किल हो जाता था। इसलिए दादा थोड़ा सा खा लेते थे। फिर दूसरी जगह भी थोड़ा खाना पड़ता था।

खाना खाकर जब वे घर लौटते तब उनकी मदर झवेर बा बिना कुछ खाए-पिए उनका इंतज़ार करती हुई बैठी रहती थीं। मदर के साथ न खाने पर मदर को दुःख होता। उन्हें दुःख न हो, इसलिए दादा तीसरी बार उनके साथ खाना खाने बैठ जाते थे। मदर को खुश रखने के लिए दादा ऐसा करते थे।

किसी ने दादा से कहा, 'दादा, बा को (मदर को) खुश न रखें तो चलेगा।' तो दादा ने कहा, 'बा को तो खुश न रखें, ऐसा भला कैसे चल सकता है?'

इस तरह, दादा ने पूरी जिंदगी अपनी मदर को जरा भी दुःख नहीं होने दिया।

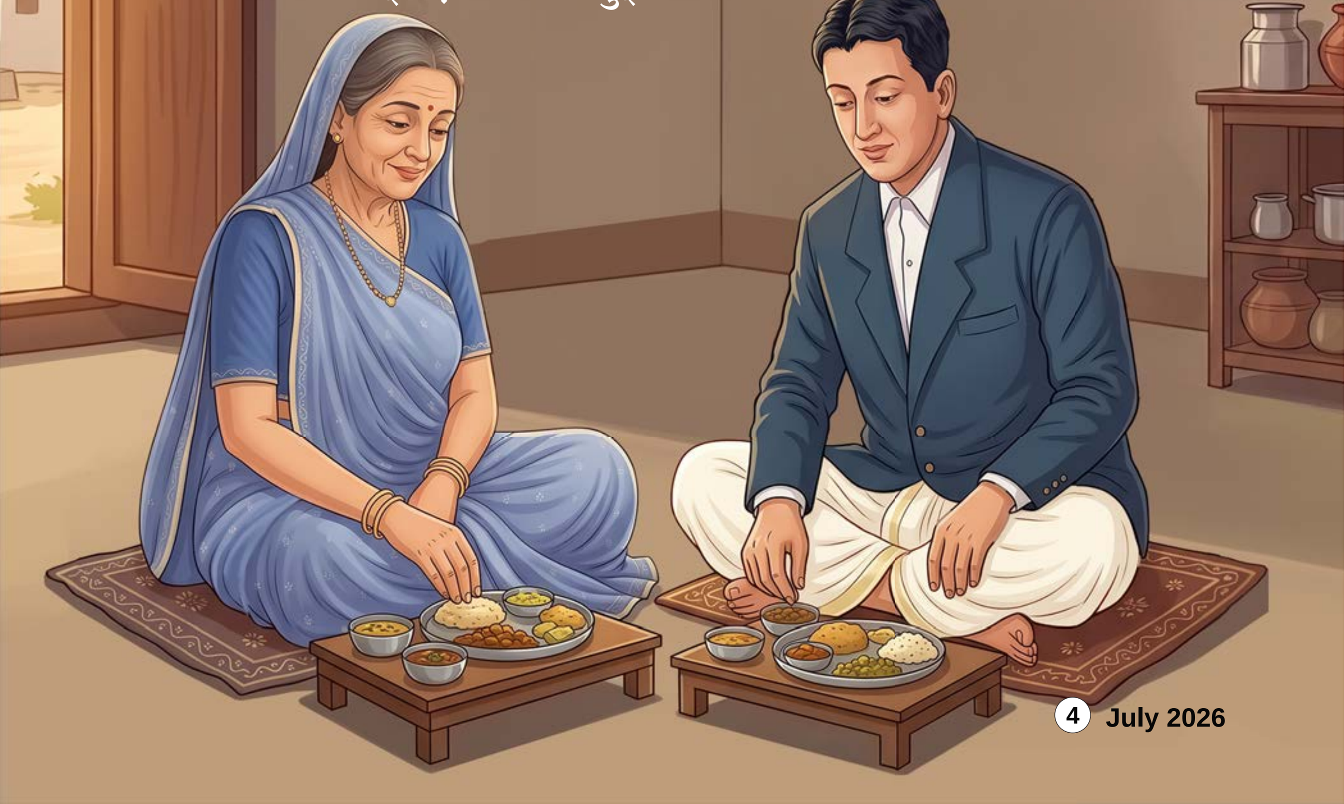

ज्ञानी कहते हैं...

मम्मी-पापा हमारे लिए कितना कुछ करते हैं। उनका हम पर कितना उपकार है। मम्मी ने हमें नौ महीने पेट में रखा, कितनी तकलीफें सहकर हमें जन्म दिया। खिलाया-पिलाया, बीमार होने पर हमारी देखभाल की। रातों की रातें जागकर बिताईं। खुद भूखे रहकर हमें खिलाया। यह हम कैसे भूल सकते हैं? भले ही हमें मम्मी-पापा की बात पसंद न आए, फिर भी पलटकर उनके सामने नहीं बोलना चाहिए। पलटकर सामने बोलने से उन्हें बहुत दुःख होता है। हमें उनकी गलतियाँ नहीं देखनी चाहिए। उनकी गलतियाँ देखने से हमें बहुत दोष लगता है। हमारा विनय धर्म पूरी तरह टूट जाता है।

अगर हमें मम्मी-पापा का उपकार याद रहता है, तो हमारे अंदर उनके लिए विनय उत्पन्न होता है। अगर हम उनके प्रति विनय रखते हैं, तो हमें उनका आशीर्वाद प्राप्त होता

है। उनके भीतर बैठे भगवान हम पर प्रसन्न हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : अगर कभी मेरा मनपसंद खाना नहीं मिलता, तो मम्मी पर गुस्सा आ जाता है। मेरी पसंद का काम नहीं होता, तो पापा को पलटकर जवाब देता हूँ।

नीरू माँ : ऐसा हो जाए तो तुरंत उसका प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। माफी माँग लेनी चाहिए।

प्रतिक्रमण यानी क्या? मान लो कि आपसे आपकी मदर का दोष देखा गया, तो तुरंत ही आपको रियलाइज़ हुआ (पता चला) कि यह गलत है, ऐसा नहीं होना चाहिए। तो उनके भीतर बैठे परमात्मा को नमस्कार करके माफी माँगना, पश्चाताप करना कि 'अरेरे! मुझसे जो हुआ वह गलत है, मुझसे गलती हो गई, अब दोबारा ऐसा नहीं करूँगा। हे प्रभु! मुझे शक्ति दीजिए कि फिर से ऐसी गलती कभी नहीं करूँ।' सिर्फ इतना ही अगर कर लेते हो कि मन ही मन उनके अंदर बैठे भगवान को नमस्कार करके माफी माँग लेते हो, तो आपकी गलती धुल जाती है।

सुनहरा चमकता दरवाज़ा
आरव, मोबाईल बंद करो और होमवर्क करने बैठो। तुम्हारा रूम कितना गंदा है, साफ करो।
आरव, तुम बहुत टाइम बर्बाद करते हो।
ओफ्फो! पूरे दिन मम्मी-पापा की किचकिच। यह करो, वह मत करो। वे लोग मुझसे प्यार ही नहीं करते... काश, मैं कोई ऐसी जगह चला जाऊँ, जहाँ मम्मी-पापा की किचकिच न हो।
उस रात आरव लाइट बंद करके आराम से सो गया।

कुछ देर बाद, आरव के रूम में एक सुनहरा दरवाज़ा खुला। एक आवाज़ आई, ‘आरव, क्या तुम्हें ऐसी जगह जाना है जहाँ कोई नियम न हों? इस दरवाज़े के उस पार ऐसी ही दुनिया है।’
यह सुनकर आरव तुरंत ही पलंग से कूदकर बाहर आया और दरवाज़े से कूदकर दूसरी तरफ पहुँच गया।
उस जगह को देखकर आरव दंग रह गया। वहाँ पेड़ों पर चॉकलेट्स लगी हुई थीं। खिलौने हवा में तैर रहे थे। मिल्कशेक की नदियाँ बह रही थीं। रोबोट्स और जानवर बातें कर रहे थे।

मैं हूँ, फ्लिप। तुम यहाँ जो चाहे कर सकते हो। नो होमवर्क, नो किचकिच। तुम्हें कोई भी सवाल हो तो मुझसे पूछना।
आरव की खुशी का ठिकाना न रहा। वह सबसे पहले कैन्डी के खेत की ओर दौड़ा। वहाँ बर्फ कैन्डी के कणों की बारिश हो रही थी।
वाऊ! मैं पूरी रात यहाँ खेलूँगा।

लेकिन जल्द ही उसकी नाक बहने लगी। उसके दाँत किटकिटाने लगे। वह काँपने लगा।
उसे मम्मी की याद आई। जब आरव को बहुत ठंड लगती, तब मम्मी उसे हॉट चॉकलेट दूध पिलाकर गरम ब्लैन्किट में लपेट देती थीं। लेकिन यहाँ उसका ध्यान रखने वाला कोई नहीं था।
अगले दिन आरव छींकते हुए एक तालाब पर पहुँचा। तालाब के उस पार जाने के लिए एक ब्रिज था। लेकिन उस ब्रिज पर से गुजरने के लिए एक पज़ल सॉल्व करना था। सभी बच्चों ने हँसते-खेलते पज़ल सॉल्व कर लिया और आगे निकल गए। लेकिन आरव पज़ल सॉल्व नहीं कर पाया।

आरव उदास हो गया। उसे डर लगने लगा। अकेलापन भी महसूस हुआ। उसे पापा की याद आई। जब वह घर पर था, तब उसे कुछ समझ में नहीं आता था तो वह दौड़ कर पापा के पास चला जाता था और पापा उसे अच्छी तरह समझाते थे। बस, उसे पापा को गले लगकर रोने का मन हुआ।

अकेला-उदास आरव चमकती कैन्डी के पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया। तभी वहाँ फ्लिप आया और आरव से उदासी का कारण पूछा।

सभी बच्चों को ऐसा ही लगता है कि मम्मी-पापा किचकिच करते हैं। लेकिन किसी को भी मम्मी-पापा का प्रेम दिखाई नहीं देता।
फ्लिप ने आकाश की तरफ इशारा किया। हवा में एक बड़ी LED स्क्रीन झूल रही थी। उसमें आरव के मम्मी-पापा दिखाई दिए।
आरव की मम्मी देर रात तक आरव के सिर पर गीला कपड़ा रख रही थीं और दूसरे दिन जल्दी उठकर काम पर लग गईं।
फिर दिखा आरव के पापा देर रात तक आरव का स्कूल प्रोजेक्ट पूरा करने में हेल्प कर रहे थे और दूसरे दिन सुबह जल्दी उठकर ऑफिस के लिए निकल गए। इस तरह, आरव को एक के बाद एक कई सीन दिखाई दिए।

फ्लिप, मुझे तो पता ही नहीं था। मैंने तो कभी इस तरह देखा ही नहीं कि खुद की परवाह किए बिना मम्मी-पापा मेरा कितना ध्यान रखते हैं। मुझे तो यही लगता था कि वे पूरे दिन किचकिच करते हैं।
आरव की बात पूरी हुई ही थी कि उसे वही सुनहरा चमकता दरवाज़ा फिर से दिखाई दिया। वह फ्लिप को 'बाइ' कहकर तुरंत दरवाज़े की ओर दौड़ा और उसमें से कूदकर अपने रूम में आ गया।

जब आरव सुबह उठा तब वह अपने बिस्तर पर सो रहा था और रूम में कोई दरवाज़ा नहीं था।
आरव, जल्दी उठो। स्कूल बस आ जाएगी।
यह क्या? किसी ने हमारे आरव को बदल डाला?!
किसी ने आरव को बदला नहीं था, लेकिन वह बदल ज़रूर गया था।

अब तक की आलू-चिली की कहानियाँ एक साथ पढ़ने के लिए...
Click Here : https://dbf.adalaj.org/TdY6ZhXI

आलू ने चिली को टाको और ब्राउनी की स्टोरी सुनाई, जिससे चिली को समझ आया कि किस तरह ईर्ष्या के कारण ब्राउनी ने सब कुछ खो दिया और ऐसी ही ईर्ष्या चिली को कोको से होती थी।

आलू की बात सुनकर चिली की आँख और नाक से पानी बहने लगा। वह आलू के कंधे पर नाक पोंछ रहा था। तभी आलू को अपने दूसरे कंधे पर भी कुछ चिपचिपा-सा महसूस हुआ। मुड़कर देखा तो पार्सली सुबक-सुबक कर रो रहा था। 'आलू भाई, मेले भाई के फेफड़ों से खून न नितले उसके लिए आपने तितना कुछ तिया!' उसकी बात सुनकर आलू-चिली समझ नहीं पाए कि वे हँसें या रोएँ।

चिली को अपने पूरे शरीर में लगी आग का रहस्य मिल गया था। जब-जब कोई कोको की प्रशंसा करता या उसे ऐसा लगता कि कोको उससे बेहतर कर रहा है, तब-तब उसके शरीर में जलन होती थी। वह भूल ही गया था कि उसे सिंगिंग पसंद है। इस ईर्ष्या के कारण उसकी सबसे पसंदीदा चीज़ ही उसे खुशी नहीं दे रही थी। वह भी ब्राउनी की तरह ही किसी अदृश्य रेस में दौड़ रहा था और हाँफ रहा था। ब्राउनी को हुए नुकसान के बारे में सोचकर ही उसके रोंगटे खड़े हो गए। लेकिन साथ ही साथ उसे खुशी भी हुई कि उसके बेस्ट फ्रेन्ड आलू ने उसे इस ईर्ष्या की आग से निकालने के लिए इतनी मेहनत की। यह कितनी सुंदर फ्रेन्डशिप है, जिसमें चिली का नुकसान न हो इसलिए आलू उसके विरुद्ध जाने को भी रेडी था, लेकिन उसकी गलत बात में साथ देने के लिए ज़रा भी रेडी नहीं था! लेकिन उसे अंदर अभी भी कुछ चुभ रहा था, खटक रहा था। मानो आलू उसका कन्फ्यूज़न समझ गया हो, वैसे बोला, 'पूछ लो, चिली!'

‘थैन्क यू, आलू! अब मुझे समझ में आया कि तुम क्यों मुझसे ऐसा कहते थे कि मैं जीतूँ या हारूँ पर मैं बेस्ट ही रहूँगा! लेकिन, जैसे कि कोको तुम्हारी बेस्ट फ्रेन्ड हो वैसे हर बात में तुम उसका साथ क्यों देते थे? तुम क्यों उसके लिए भी चिली शेक लेकर आए थे? तुम कॉम्पिटिशन में मेरे बदले उसकी साइड क्यों ले रहे थे?’ चिली की आँखों में शिकायत झलक रही थी।

आलू इतने दिनों से जो कहने का प्रयत्न कर रहा था, वह बात अब चिली सुनने के लिए तैयार हुआ था। आलू ने चिली को एक सैड स्माइल दी और कहा, ‘तूम्हें याद है, जब मैं स्केटिंग कॉम्पिटिशन पूरा करके तुम्हारे पास आया और हमने तय किया कि हम नेक्स्ट डे साथ में रियाज़ करेंगे? मैं तुम्हारे घर से निकलकर तुम्हारे लिए चिली शेक लेने थीओ के कैफे गया। मैंने तुम्हारे लिए चिली शेक खरीदा और

तभी मुझे एक आवाज़ सुनाई दी। कोई दिखाई नहीं दे रहा था। सिर्फ ऐसा लगा कि दूर अंधेरे में कोई रो रहा है। रोने की आवाज़ सुनते ही थीओ ने एक आह भरी और जिफ्फी की आँखों में आँसू आ गए। मुझे तो कुछ समझ ही नहीं आया।'

'भूत... भूत था न आलू भाई? मुझे बेज़िल कह रही थी कि वहाँ बरगद के पेड़ में एक भूत रहता है, जो रात को थीओ के कैफे से चिली शेक ले जाता है और फिर उसे तीखा लगता है इसलिए रोता है! पर उसे तीखा लगता है तो उसे चिली शेक पीना ही नहीं चाहिए न!' हमेशा की तरह आत्मविश्वास के साथ पार्सली बोला।

भूत... यह भूत कहाँ से आया? आपको क्या लगता है? क्या सच में कोई भूत रो रहा था या फिर...

सामग्री :

खाखरा

प्याज

टमाटर

कैप्सीकम

पत्तागोभी

टमाटर सॉस/
पिज़्ज़ा-पास्ता
सॉस

ओरेगानो

चिली फ्लेक्स

स्वादानुसार
नमक

चीज़ क्यूब

बनाने का तरीका :

सबसे पहले चॉपर में सब सब्जियाँ (प्याज, टमाटर, कैप्सीकम, पत्तागोभी) डालकर उन्हें बारीक चॉप कर लें। उसके बाद उसे एक बाउल में निकाल लें।

एक प्लेट में एक खाखरा रखें।

खाखरा पर पिज्ज़ा सॉस लगाकर नमक छिड़क लें।

बारीक कटी हुई सब्जियों को खाखरा पर अच्छे से फैला लें।

अब एक चीज़ क्यूब को कद्दूकस करके सब्जी के ऊपर फैला लें।

अंत में उसके ऊपर चिली फ्लेक्स और ओरिगानो छिड़कें।

आपका टेस्टी खाखरा पिज्ज़ा तैयार है। प्लेट में डालकर आपके मम्मी-पापा को सर्व करें।

शेफ टिपः अगर आपको खाखरा पिज्ज़ा करारा बनाना हो तो टॉपिंग लगाने से पहले खाखरा को तवे पर हल्का सा सेक लें।

शर्त

दूर एक हरे-भरे जंगल में पीहू नाम की बिल्ली अपने मम्मी-पापा के साथ रहती थी। एक दिन स्कूल में उसने अपने फ्रेन्ड्स से 'मियाऊँ- मस्ती' नामक नए ऐडवेन्चर पार्क के बारे में सुना।

'रोलर-कोस्टर में बहुत मज़ा आया! लेकिन वॉटरफॉल फिसलपट्टी बेस्ट थी।' सुब्बू ने कहा। 'हाँ, उसमें तो जितनी बार बैठें, उतनी बार मज़ा ही आता है!' मीनू ने कहा।

'और मलाई आइस्क्रीम तो मैं खाता ही रह गया।' जूमो के मुँह में फिर से पानी आ गया।

यह सब सुनकर पीहू को भी ऐडवेन्चर पार्क जाने की इच्छा हुई। उसने तय कर लिया कि वह रविवार को मम्मी-पापा के साथ मियाऊँ-मस्ती ऐडवेन्चर पार्क जाएगी।

शाम को उसने पापा से कहा, 'पापा, इस रविवार को मियाऊँ-मस्ती ऐडवेन्चर पार्क चलें? प्लीज़ पापा...'

'बेटा, इस रविवार को ऑफिस में काम है। हम अगले रविवार ज़रूर चलेंगे।' पापा ने प्रॉमिस किया।

'पापा, आप हमेशा ऐसे ही करते हो। प्लीज़, ले चलिए न!' पीहू ने पापा को मनाने की कोशिश की।

'इस रविवार को तो हो ही नहीं पाएगा। तुम ऐसा करो, मम्मी के साथ चली जाओ।' पापा ने कहा।

तभी मम्मी किचन से बाहर आईं और कहा, 'पीहू, इस रविवार को मौसी आ रही हैं, इसलिए हम नहीं जा पाएँगे।'

पीहू एकदम रुआँसी हो गई और फिर चिढ़कर बोली, 'आप लोग कभी भी मेरी इच्छा

पूरी करते ही नहीं हो! आपको मेरी कोई परवाह ही नहीं है। मुझे आप लोगों से बात ही नहीं करनी।' ऐसा कहकर, पैर पटककर धम-धम करते हुए रूम में चली गई।

मम्मी-पापा को पीहू की बातों से बहुत दुःख हुआ। लेकिन वे कुछ बोले नहीं।

उस रात देर तक पीहू को नींद ही नहीं आई। उसके मन में ऐडवेन्चर पार्क के ही विचार चल रहे थे। उसे अचानक दादी के कहे शब्द याद आए, 'कोई भी दुःखी बच्चा चमकपरी को याद करता है, तो चमकपरी हमेशा उसकी मदद करती है।'

पीहू ने दिल से चमकपरी को याद करके कहा, 'चमकपरी, प्लीज़ मेरी हेल्प करो न।'

जैसे ही पीहू का वाक्य पूरा हुआ वैसे ही पूरा रूम चमकदार कणों से भर गया और एक तेजस्वी परी उसकी आँखों के सामने प्रकट हुई। उसने पीहू को एक मीठी सी मुस्कान दी। पीहू को विश्वास ही नहीं हुआ।

वह आश्चर्य से बोली, ‘आप... सच में.... चमकपरी हो?’

‘हाँ पीहू! जो बच्चा दिल से मुझे याद करता है उसे हेल्प करने के लिए मैं तुरंत ही हाज़िर हो जाती हूँ। बोलो, तुम्हें क्या प्रॉब्लम है?’

पीहू रोने लगी। वह रोते-रोते बोली, “मेरे मम्मी-पापा मेरी एक भी इच्छा पूरी नहीं करते! मैंने उन्हें सिर्फ इतना ही कहा कि ‘मुझे इस रविवार मियाँऊ-मस्ती ऐडवेन्चर पार्क ले चलो।’ लेकिन वे लोग मुझे नहीं ले जाएँगे!”

‘ओह! अच्छा? ऐसा हो गया! यह तो बहुत गलत कहा जाएगा! ऐसा तो नहीं चलेगा! मैं ज़रूर तुम्हारी हेल्प करूँगी!’ चमकपरी ने कहा।

‘सच में?’ अचानक पीहू के आँसू रुक गए। मानो उसने आँसू बंद करने का कोई स्विच दबा दिया हो।

‘लेकिन तुम्हें मेरी एक बात माननी होगी।’ चमकपरी ने धीरे से कहा।

‘क्या?’

‘जब तक यह इच्छा पूरी नहीं होती, तब तक तुम मम्मी-पापा से दूसरा कुछ नहीं माँगोगी.... तो ही

मैं तुम्हारी हेल्प कर पाऊँगी, समझ में आया?'

पीहू सोच में पड़ गई।

चमकपरी बोली, 'क्या सोच रही हो? तुम्हीं ने कहा न कि तुम्हारे मम्मी-पापा तुम्हारी एक भी इच्छा पूरी नहीं करते। तो यह तो आसान है न?!'

पीहू ने एक फीकी-सी मुस्कान दी और 'हाँ' कहा।

दूसरे दिन सुबह पीहू को मलाईदार खीर खाने की इच्छा हुई। वैसे तो वह तुरंत ही मम्मी से कह देती, लेकिन उसे चमकपरी की बात याद आई और उसने सोचा, मुझे मम्मी से कुछ नहीं माँगना है तभी चमकपरी मेरी इच्छा पूरी करेगी। ऐसा सोचकर वह चुप हो गई।

उसने डाइनिंग टेबल पर देखा तो मम्मी ने खीर बनाई थी।

'अरे वाह! यह तो जादू हो गया। बिना माँगे ही मिल गया!' पीहू खीर खाकर बहुत खुश हो गई।

मम्मी ने खीर परोसते हुए कहा, 'बेटा, पिछले हफ्ते तुमने कहा था न कि तुम्हें खीर खानी है। आज जाकर कहीं बनाने का मौका मिला।'

'थैन्क यू मम्मी।' पीहू ने खुशी-खुशी खीर खाई।

दोपहर को स्कूल से आकर पीहू अपनी ड्रॉइंग बुक में कलर कर रही थी। उसके कलर्स खराब हो गए थे। फिर भी वह चुपचाप कलर कर रही थी। मम्मी ने यह देखा तो तुरंत बोलीं, 'अरे पीहू, तुम्हारे क्रेयॉन्स तो बिल्कुल छोटे हो गए हैं! कल तुम्हारे लिए नए क्रेयॉन्स ले आऊँगी।'

पीहू खुश हो गई। उसने मन में सोचा, 'मैंने क्रेयॉन्स नहीं माँगे थे। इसलिए कोई हर्ज नहीं।'

पीहू को नए शूज़ चाहिए थे। उसके पुराने शूज़ थोड़े छोटे हो गए थे। उसने सोचा, 'रविवार को ऐडवेन्चर पार्क हो आऊँ ,फिर माँगूँगी।'

शनिवार की शाम थी। बस, कल 'ऐडवेन्चर पार्क ' जाने का

जादू होने वाला है। शाम को खेलने जाने के लिए पीहू ने शूज़ की अलमारी खोली। देखा तो पापा उसके लिए नए शूज़ लेकर आए थे। ये वही शूज़ थे जिन्हें कुछ दिन पहले उसने मॉल से लेने की ज़िद की थी।

कुछ देर के लिए वह बहुत खुश हो गई, लेकिन फिर अचानक उसके चेहरे पर उदासी छा गई। उसके शूज़ के पास ही पापा के शूज़ रखे थे। जो बिल्कुल पुराने हो गए थे। उनमें छेद पड़ गए थे। पीहू ने सोचा, 'पापा को भी नए शूज़ की ज़रूरत है। उस दिन मॉल में उन्हें भी शूज़ पसंद आए थे। लेकिन उन्होंने नहीं खरीदे और आज भी मेरे लिए ही खरीदे, अपने लिए नहीं।'

उस रात पीहू सोचने लगी, 'मम्मी-पापा मेरी सारी इच्छाएँ पूरी करते हैं। कई बार तो वे बिना कहे ही पूरी कर देते हैं। मैंने बिना सोचे-समझे ही कह दिया कि उन्हें मेरी परवाह ही नहीं है। उन्हें कितना दुःख हुआ होगा!'

पीहू ने ऊपर देखकर चमकपरी को याद किया और कहा, 'मुझे इस रविवार ऐडवेन्चर पार्क नहीं जाना है। मम्मी-पापा जब मुझे ले जाएँगे तब मैं जाऊँगी।'

चमकपरी तुरंत ही रूम में हाज़िर हो गई। उसने पीहू को देखकर फिर से प्यारी-सी मुस्कान दी। उसने पीहू से कहा, 'पीहू, तुम कितनी समझदार हो कि तुम्हें बिना किसी जादू के ही समझ में आ गया कि मम्मी-पापा तुम्हारी सारी इच्छाएँ पूरी करते हैं। चाहे तुरंत न हो पाएँ, लेकिन सही टाइम आने पर वे ज़रूर पूरी हो जाती हैं। मैंने देखा है कि तुम्हारे जैसे समझदार बच्चों को यह बात जल्दी समझ में आ जाती है। अब से अगर मम्मी-पापा को दुःख हो ऐसा बोल दो, तो तुरंत ही माफी माँग लेना। लेकिन हाँ, तुम्हें ऐसा कहने की मुझे ज़रूरत नहीं है। तुम तो समझदार हो। तुम्हें तो पता ही होगा न!' ऐसा कहकर चमकपरी गायब हो गई। अगले दिन, यानी रविवार को पीहू ऐडवेन्चर पार्क नहीं जा पाई। लेकिन उसके अगले रविवार को पीहू ने पार्क में इतना मज़ा किया कि पूछो ही मत!

चलो खेलें...

पहचानो अपने मम्मी-पापा को

पापा का नाम-____________________

मम्मी का नाम-____________________

मम्मी-पापा का पसंदीदा भोजन

____

____

शौक

____

____

मम्मी-पापा की पसंदीदा चॉकलेट

____

____

मम्मी-पापा का पसंदीदा आइस्क्रीम

____

____

____

मम्मी-पापा का प्रिय कलर

मम्मी-पापा की पसंदीदा जगह

____

____

मम्मी-पापा का पसंदीदा म्यूज़िक

____

____

मम्मी खुश हो जाती हैं जब मैं____________

____

____

____

मम्मी-पापा का जन्मदिन

____

____

मम्मी-पापा की प्रिय किताब

____

____

पापा खुश हो जाते हैं जब मैं ____________________

____

आपका जवाब हमें इस नंबर पर 9313665562 करो...

मीठी यादें

मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ती थी, जब मैं और मेरी मम्मी हमेशा के लिए अमेरिका से इन्डिया रहने आ गए थे। नीरू माँ बहुत ही खुश हुईं कि हम सब कुछ छोड़कर अमेरिका से इन्डिया आ गए। मुझे नीरू माँ के साथ रहना था और इसीलिए मैं इन्डिया आने के लिए तैयार हुई थी।

मैंने एक स्कूल में ऐडमिशन लिया। लेकिन इन्डिया के स्कूल में पढ़ाई का तरीका अमेरिका से बिल्कुल अलग था। अमेरिका में पाँचवीं कक्षा तक मैंने कभी कोई परीक्षा नहीं दी थी। वहाँ के स्कूल में सिर्फ क्विज़ और एक्टिविटी होती थी, जिसमें टीचर्स जाँच लेते थे कि हमें समझ में आया है या नहीं। लेकिन इन्डिया में तो सभी विषयों की एक साथ परीक्षा ली जाती है, जिसमें एक-एक शब्द रटकर लिखना होता है। ऐसा करना मेरे लिए बहुत कठिन था। इस तरह रटकर लिखना मेरे लिए बहुत ऊबाऊ था।

मुझे लगा कि मैं तो नीरू माँ के लिए इन्डिया आई हूँ। मुझे तो उनके साथ रहना है। मुझे नीरू माँ बहुत अच्छी लगती हैं, इसलिए मैं इन्डिया छोड़कर तो नहीं जाऊँगी। लेकिन पढ़ाई तो छोड़ सकती हूँ न? मुझे इस तरह से नहीं पढ़ना है। मुझे तो नीरू माँ की सेवा ही करनी है। उसके लिए पढ़ना कहाँ ज़रूरी है?

एक दिन मैंने नीरू माँ से कहा, 'नीरू माँ, मुझे नहीं पढ़ना है।'

नीरू माँ ने शांति से सुना। वे बिल्कुल गुस्सा नहीं हुईं। उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा, 'ठीक है, हम ऐसा करते हैं कि काम करने वाले भाई को छुट्टी दे देते हैं। जो पढ़ाई नहीं करेगा उसे बर्तन माँजने होंगे, कपड़े धोने होंगे और खाना बनाना पड़ेगा। इसलिए अब कल से तुम्हें ये सारे काम करने होंगे।'

यह सुनकर मैंने कहा, 'नहीं, नहीं नीरू माँ, मुझे ये सारे काम नहीं करने, मैं पढ़ाई करूँगी।'

कुछ दिनों बाद नीरू माँ ने मुझे अपने पास बुलाकर कहा, 'अगर हम पढ़ाई करते हैं, तो दादा का ज्ञान समझने में ज्यादा हेल्प होती है। हम डॉक्टर बने और इसीलिए जब दादा को फ्रैक्चर हुआ, तब दादा की सेवा में रह सके। तुम अच्छी तरह पढ़-लिख लोगी, तो हमारे साथ रहकर सेवा कर सकोगी।'

और उसके बाद कभी मुझे यह विचार नहीं आया कि मुझे पढ़ाई नहीं करनी है।

मित्रों, ये बहन बहुत अच्छी तरह पढ़ीं और बड़ी होकर डॉक्टर बनीं। आज वे दादा के जगत्-कल्याण की सेवा में समर्पित हैं।

दादा भगवान बचपन से ही विचारशील थे। वे ओब्ज़र्वेशन करके निष्कर्ष निकालते थे। उनके ऐसे सुंदर प्रसंग अब एक क्लिक पर।

दादा भगवान की कहानियाँ अब

kids.dadabhagwan.org

वेबसाइट पर!